1

समाजशास्त्र : अर्थ, उद्भव, क्षेत्र एवं विषय-वस्तु

[SOCIOLOGY : MEANING, ORIGIN, SCOPE AND SUBJECT-MATTER]

"समाजशास्त्र समाज का अध्ययन है; यह समाज को समझने का प्रयत्न करता है, केवल अपने लिए ही नहीं अपितु एक समृद्धिशाली समाज-व्यवस्था में एक अधिक पूर्ण मानव के विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिए भी।"

—ओडम

प्रख्यात् दार्शनिक मनु की मान्यता यह है कि सृष्टि के शुरू होने से पूर्व सम्पूर्ण जगत अन्धकारमय था। स्वयं रमात्मा भी इस स्थिति को सहन न कर सके। अत: परम जगदीश्वर ने एक ज्योति जलाई; उस ज्योति से ज्योतिर्मय जाओं की सृष्टि हुई—स्वर्ग और नरक के बीच एक प्राणयुक्त जगत की रचना हेतु। इसी उद्देश्य से उस रचनाकार पुरुष और प्रकृति (नारी) दोनों को ही रचा। दोनों के संगम ने एक तीसरे को जन्म दिया—एक से अनेक हुए। र उसका भी विस्तार होता रहा—पति-पत्नी से परिवार बना, परिवार से गोत्र, गोत्र से ग्राम, ग्राम से गण और गण गणराज्य—समूह, समुदाय और फिर समाज। इस सृष्टि-प्रक्रिया में अगर समानताएँ हैं तो भिन्नताएँ भी; अगर हयोग है तो संघर्ष भी—कुछ लेना तो कुछ छीन लेना, कुछ देना तो कुछ पाकर कृतार्थ होना। ये सभी सामूहिक वन के स्वाभाविक पक्ष हैं—न केवल मानव-समाज के ही अपितु पशु-समाज के भी। साथ ही, ये सब समाज सदस्यों के बीच पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के अन्त:सम्बन्धों की ही अभिव्यक्तियाँ हैं। इन सम्बन्धों के जाल '**समाज**' कहते हैं। इसी समाज के वैज्ञानिक आधार पर अध्ययन करने वाले विज्ञान का नाम है—'**समाजशास्त्र**'।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्र 'समाज' का शास्त्र या विज्ञान है और इस रूप में यह ाज या सामाजिक जीवन का ही अध्ययन करता है। इस अध्ययन का आरम्भ कब और कैसे हुआ, यह तो श्चित रूप से नहीं बताया जा सकता परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि अति प्राचीनकाल से ही मनुष्य ध्यान सामाजिक घटनाओं की ओर आकर्षित होता रहा है और उनके सम्बन्ध में विचार भी किया जाता रहा है। ई भी मानव-समाज, चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक, सामाजिक समस्याओं से पूर्णतया न मुक्त था और न है; ा: उन समस्याओं के प्रति समाज के सदस्यों में कुछ-न-कुछ जागरूकता भी अवश्य ही रही होगी। इस रूप में स्पष्ट है कि 'समाजशास्त्र' का अस्तित्व, चाहे वह लिखित रूप में हो या अलिखित रूप में, स्पष्ट हो या स्पष्ट, वैज्ञानिक हो या अवैज्ञानिक, सामाजिक इतिहास के प्रत्येक स्तर पर अवश्य ही रहा होगा। इसलिए **रॉबर्ट बीरस्टीड** (Robert Bierstedt) का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि "**समाजशास्त्र का अतीत फी प्राचीन या लम्बा है।**" इसी कारण **श्री गिसबर्ट** (Gisbert) ने भी यह मत व्यक्त किया है, "**यदि मानव भाव से एक दार्शनिक है तो वह स्वभावत: ही एक समाजशास्त्री भी है।**" फिर भी फ्रांसीसी विद्वान **ऑगस्त कॉम्टे** (August Comte) ने सर्वप्रथम सन् 1838 में समाज का वैज्ञानिक रूप में अध्ययन करने ा एक नये विज्ञान की कल्पना की और उसका नाम 'Social Physics' (सामाजिक भौतिकी) रखा, पर में श्री कॉम्टे ने अपने इस नवीन सामाजिक विज्ञान को 'Sociology' (समाजशास्त्र) नाम से सुशोभित ा। आइये, सबसे पहले इस शास्त्र के शाब्दिक अर्थ (Etymological meaning) के बारे में थोड़ा कुछ -समझें।

जशास्त्र का शाब्दिक अर्थ (The Etymological Meaning of Sociology)

यदि 'समाजशास्त्र' शब्द के अंग्रेजी रूपान्तर 'SOCIOLOGY' शब्द का अर्थ निकाला जाये तो यह कहा सकता है कि 'Sociology' दो शब्दों 'Socio' और 'Logy' (सोशियो और लॉजी) से मिलकर बना है